बिश्नोई समाज एवं पर्यावरण संरक्षण

भारत के मरुस्थलीय क्षेत्र में ओजस्वी चेहरा, गठीला बदन, लम्बी देह, बड़ी–बड़ी मूंछें, साफ धोती–कुर्ता पहने, साफा बांधे, तेज धूप में लम्बे–लम्बे डग भरते, दिखाई देने वाले 'बिश्नोई' हैं।

सुदूर रेगिस्तान में रहने वाले बिश्नोई अतीत से ही धर्म निरपेक्षता, दहेज विरोधी, विधवा–विवाह, लैंगिक समानता और महिला स्वतन्त्रता जैसे आधुनिक विचारों के प्रबल समर्थक ही नहीं रहे, बल्कि रेगिस्तान के वृक्षों तथा वन्य जीवों की सुरक्षा के भी सजग प्रहरी रहे हैं। बिश्नोईयों के खेतों में हरे–भरे सैकड़ों खेजड़ी के लहलहाते पेड़ और उसकी छांव में निश्चिन्त सुस्ताते वन्य जीव पूर्णतया आश्वस्त हैं कि वे सुरक्षित हैं। पेड़–पौधों एवं वन्य जीवों की सुरक्षा बिश्नोई का स्वाभाविक धर्म है।

राजस्थान ने युगों से महान् संतों, योगियों, भक्तों एवं वीरों को जन्म दिया है। मीरा, राणा प्रताप, वीर दुर्गादास, द्रोणाचार्य, कपिल मुनि जैसी महान आत्माओं का लालन–पालन इसी मरुधरा पर ही हुआ है। गुरुदेव जाम्भोजी की जन्मस्थली पीपासर भी राजस्थान का ही ग्रामांचल है। आज से पांच सौ वर्ष पूर्व जाम्भोजी द्वारा स्थापित बिश्नोई समाज जिस धर्म का पालन करता है, वह पर्यावरण एवं जीव रक्षा के शाश्वत मूल्यों पर ही आधारित माना जा सकता है। बिश्नोई सम्प्रदाय में पेड़ काटना, जानवरों एवं पक्षियों को मारना धर्म विरुद्ध माना जाता है। यही कारण है कि पर्यावरण को बनाये रखना तथा जीव–जन्तुओं की रक्षा करना बिश्नोई अपना धर्म समझते हैं।

गुरु जाम्भोजी को अवतारी पुरुष माना जाता है। जाम्भोजी ने अपने विचारों को 29 सूत्रों में संजोया इसी कारण इन बीस और नौ सूत्रों को मानने वाले अनुयायी बिश्नोई कहलाये।

बिश्नोई अपने गुरु जाम्भोजी महाराज के उन्नतीस उपदेशों को सच्चे मन से मानने वाला भक्त है। वह सर्वधर्म समन्वय का प्रतीक, प्रकृति का

उपासक और शुद्ध शाकाहारी है। वह मानता है कि उन्नतीस गुरु आदेशों का योग सनातन धर्म के बीस एवं अन्य धर्मों के नौ उच्च आदर्शों के होने से वह (बिश्नोई) (बीस नौ) है। स्वास्थ्य रक्षा, सच्चरित्र, पवित्रता, श्रद्धा, विश्वास, वृक्षों तथा वन्यजीवों की सुरक्षा, वाणी में कोमलता, दयालुता, नम्रता, सतय का अनुसरण तथा सभी प्रकार के नशीले पदार्थों का त्याग गुरु के आदेशों का सार है। हिन्दुओं को राम–राम और मुसलमानों को सलाम कहने वाला बिश्नोई सभी धर्मावलम्बियों को अपने धर्मनिरपेक्ष सम्प्रदाय में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रण देता है।

खेती पर जीवन–यापन करने वाला बिश्नोई खेत में अकेला ही काम नहीं करता, उसकी स्त्री भी कंधे से कंधा मिलाकर खेत में काम करती है। रेगिस्तानी इलाके में प्रायः अकाल की स्थिति रहती है। खेती एक जुआ है इसलिए बिश्नोई अकेले खेती पर ही निर्भर नहीं है। वह गाय, भैंस, ऊंट पालता है किन्तु बकरी व भेड़ नहीं पालता। गाय व भैंस का दूध बिश्नोई के भोजन का प्रमुख भाग होता है। दूध के अधिकांश भाग से वह दही, मक्खन तथा घी बनाता है।

वर्षा ऋतु के बाद जब खेती का काम निबट जाता है तब खाली समय में बिश्नोई बैठा नहीं रहता। इन दिनों रस्सी बनाना, खेती के उपकरणों की मरम्मत करना और यदि कोई अन्य कार्य नहीं हो तो चारा और जंगल की सूखी लकड़ी बीनने के लिए खेत का चक्कर लगाने जाता है।

अतीत से ही जंगल और उसकी वनस्पति के साथ रहने वाला बिश्नोई वृक्षों और जंगली झाड़ियों का उपयोग घर बनाने, खेत की बाड़ बनाने, रस्सी तथा टोकरियां बनाने के लिए करता है, किन्तु इसके लिए वह हरे पेड़ों को नहीं काटता।

हरे वृक्षों के प्रति इनकी अटूट श्रद्धा के अनेक उदाहरण मिलते हैं जिसमें खेजड़ली ग्राम का उदाहरण अविस्मरणीय है। करीब ढाई सौ वर्ष पहले औरंगजेब के शासनकाल में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह ने एक नजदीकी ग्राम खेजड़ली से अपने महल के निर्माण के लिए हजारों कारिंदों को कुल्हाड़ियां देकर वृक्ष काटकर लाने के लिए भेजा। पर ग्राम के बिश्नोई पुरुष ही नहीं, बलिक महिलाएं भी वृक्षों को बचाने लिए उनसे लिपट गयी। कारिंदों ने पेड़ों से लिपटे 363 पुरुषों–महिलाओं के सिर धडों से अलग कर दिया। हादसे में 69 महिलायें और 294 पुरुषों ने अपने गुरु जाम्भेश्वर महाराज की जय बोलते हुए अपना जीवन वृक्षों के लिए समर्पित कर दिया। महाराजा को जब इस घटना की सूचना मिली तो नें पांव खेजड़ली पहुंच कर पेड़ों की कटाई को रुकवाया और बिश्नोई समुदाय को ताम्रपत्र भेंट दे शपथपूर्वक कहा कि तत्काल जिन स्थानों

पर बिश्नोई रहते हैं, हरे वृक्षों की कटाई पर और वन्य–प्राणियों के शिकार पर प्रतिबन्ध लगाया जाता है। आज बिश्नोई के ग्राम में वनस्पति तथा वन्य जीवों को सुरक्षा मिलने से केवल उनका संरक्षण ही नहीं होता बल्कि पशुओं को तपते रेगिस्तान में ठंडी छाया मिलती है तथा रेतीली जमीन का कटाव भी रुकता है।

बिश्नोई मानते हैं कि जो व्यक्ति सभी प्राणियों से प्यार करता है केवल वही स्वयं से प्यार करता है इसलिए वह अतीत से ही वन्य जीवो की रक्षा करता आ रहा है। ये वन्य जीव विश्नोइयों की ढाणियों में ऐसे घूमते हैं मानो कस्बो की गलियों एवं घरों में कुत्ते, बिल्ली घूमते हों। हरे वृक्षों तथा वन्य जीवों के संरक्षण के लिए बिश्नोई द्वारा किए जाने वाले अथक प्रयास से ही रेगिस्तान में मानव तथा पर्यावरण के बीच संतुलन कायम रह सकता है।

श्री जाम्भोजी ने पांच सौ वर्ष पूर्व ही हरे वृक्षों के महत्त्व को समझाते हुए उनकी रक्षा का भार वहन करने हेतु अपने अनुयायियों को उत्प्रेरित कर दिया था। खेजड़ली को चिपको आन्दोलन का उद्भव माना जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी, जहां हरे–भरे पेड़ों की रक्षा हेतु मनुष्य स्वयं कट गये। आज 250 वर्ष बाद भी बिश्नोई समाज में वृक्ष संरक्षण एक स्वस्थ परम्परा के रूप में जीवित है। यह समाज आज भी वृक्षों तथा जीव–जन्तुओं की रक्षा उसी साहस से करता है जैसा कि उन्होंने उस समय किया था। यही कारण है कि आज बिश्नोई सम्प्रदाय के गांव हरे–भरे हैं और वहां स्वच्छन्दता से विचरण करने वाले जानवरों को देखकर उनके गांवों की सहज में ही पहचान हो जाती है। काले हिरण बिश्नोई गांवों के आस–पास बड़ी संख्या में दृष्टिगोचर होते हैं। आज यहां एक तरफ वन्य–जीवों की नस्लें खत्म होने का खतरा बना हुआ है, वहीं राजस्थान में विश्नोइयों के गांवों में जीव मात्र का शिकार पूर्णतः वर्जित है। आज विभिन्न पशु–पक्षियों तथा गोडावण जैसे दुर्लभ पक्षी के राजस्थान में उपलब्ध होने का श्रेय गुरुदेव की शिक्षा का उनके अनुयायियों पर पड़े अमिट प्रभाव को ही है।

यदि सरकारी सरक्षण इस भावना के मुकाबले पचास प्रतिशत ही प्रभावी हो जाए तो पर्यावरण व शुद्ध वातावरण को बनाये रखने की आधी समस्या तो निश्चित रूप से हल होने की प्रबल संभवनाएं बन सकती हैं।

भादों मास में दशमी को बिश्नोई लोगों का 'खेजड़ली' गांव में मेला लगता है। कुछ वर्ष तक वहां उन शहीदों की याद में 363 वृक्ष लगाये गये जिन्होंने वृक्षों की रक्षा हेतु अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया था। उनके प्रति आस्था प्रकट करने का इससे बढ़कर स्मारक और क्या हो सकता है ? श्री जाम्भोजी सदा मानव जाति के प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। जीवों तथा वृक्षों की रक्षा के महत्त्व के साथ जाम्भोजी केवल बिश्नोई समाज के ही नहीं बल्कि समस्त मानव समाज के लिए प्रेरणादायक बने रहेंगे।

श्री जाम्भोजी महाराज की शिक्षाएं वर्तमान काल में भी पूर्णतः प्रासंगिक हैं। उनकी समाधि बीकानेर जिले के नोखामण्डी तहसील से 15 किलोमीटर दूर पूर्व दिशा की ओर गांव तालवा मुकाम में बनी हुई है जो आज भी समूचे विश्व में 'पर्यावरण संरक्षण' के परिपेक्ष्य में प्रेरणास्रोत है और सदा रहेगा।

अन्ततः हम यह कह सकते हैं कि बिश्नोई समाज सही अर्थों में आधुनिक व वैज्ञानिक विचारधारा का प्रतीक हैं। जिन अंधविश्वासों और प्रकृति का शोषण करने वाली क्रियाओं एवं सामाजिक कुरीतियों के साथ आज का अधिकांश भारतीय समाज जुड़ा हुआ है बिश्नोई उसे अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखते प्रतीत होते हैं। वास्तव में, बिश्नोई समाज इस आधुनिक वैज्ञानिक युग में 'पर्यावरण संरक्षण' में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

❑❑